International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume XIII, Issue I, January – February 2026 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.999

नई शिक्षा नीति और समावेषी विकास पर एक अध्ययन

(A STUDY ON THE NEW EDUCATION POLICY AND INCLUSIVE DEVELOPMENT)

डॉ. दीपक जॉनसन
सहा0 प्राध्या0 (राजनीति शास्त्र)
शासकीय आदर्श महाविद्यालय दमोह (म.प्र.)

सारांश– **नई शिक्षा नीति 2020**, शिक्षा नीति के चल रहे प्रणाली में सुधार के साथ–साथ ऐतिहासिक बदलाव लाने वाला नीति है। **नई शिक्षा नीति 2020**, एक व्यापक रूपरेखा है जो शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के साथ–साथ, सभी वर्गों का समग्र विकास सुनिश्चित कर सके। भारत की शिक्षा प्रणाली का इतिहास, विकास के साथ–साथ निरंतर देश, काल, समयचक्र एवं परिस्थिति के अनुरूप हमेशा से परिवर्तनशील रहा है। वैदिक काल में उन्नत शिक्षा प्रणाली के प्रमाण मिलते हैं। कालान्तर में भारतीय शिक्षा को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव अंग्रेजी शासकों द्वारा रखी गई, जिस पर उदारवादी विचारधारा एवं ईसाई धर्म का प्रभाव दिखाई देता है। **नई शिक्षा नीति 2020**, बदलाव की एक पहल है जो सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, डिजिटल शिक्षा, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक की विकास की ओर अग्रसर करेगा तथा खासकर आर्थिक रूप से पिछड़े या वंचित समूहों सहित सभी का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम शिक्षा प्रणाली पर बल देती है।

मुख्य शब्दः– नवाचार, डिजिटल शिक्षा, समावेषी शिक्षा, समग्र विकास, सार्वभौमिकीकरण।

प्रस्तावना–:

भारत की शिक्षा प्रणाली का इतिहास विकास के साथ–साथ निरंतर देश, काल, समयचक्र एवं परिस्थिति के अनुरूप हमेशा से परिवर्तनशील रहा है। वैदिक काल में उन्नत शिक्षा प्रणाली के प्रमाण मिलते हैं। कालान्तर में भारतीय शिक्षा को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। वैदिक काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना एवं धर्मों के अनुसार आबंटित कार्य से रहा है। परंतु इनमें स्त्रियों एवं शूद्रों को समान शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रखा गया था। हालांकि अपाला धोषा, सुलोचना इत्यादि विदुषी महिलाओं का उदाहरण वैदिक काल में चिन्हित है। प्राचीन काल में शिक्षा गुरूकुल प्रणाली रही है। जैन एवं बौद्धकाल में वंचित वर्गों की बात की गई है। इसी प्रकार मध्य काल में इस्लाम धर्म के प्रभाव के कारण मदरसे एवं मकतब शिक्षा के केंद्र बने लेकिन भारतीय शिक्षा प्रणाली पर इस्लाम पर अधिक प्रभाव नहीं दिखायी पड़ा। आगे चलकर भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव अंग्रेजी शासकों द्वारा रखी गई जिस पर उदारवादी विचारधारा एवं ईसाई धर्म का प्रभाव दिखाई देता है। राजाराम मोहन राय जैसे समाज सुधारक, अंग्रेजी भाषा पर आधारित शिक्षा प्रणाली बल दिये एवं शिक्षा का व्यवसायीकरण की शुरूवात भी इसी काल से दिखाई देता है।

शिक्षा प्राप्त कर रोजगार प्राप्त करना मुख्य उद्देश्य बन गया क्योंकि पाश्चात्य रीति या अंग्रेजी भाषा से शिक्षित भारतीय भी आर्थिक स्थिति में सुधार को देखते हुए ऐसी शिक्षा पर लोगों का आकर्षण रहा एवं अभिजन वर्ग तक ही सीमित रहा है। लेकिन इस काल में स्त्रियों के दशा में सुधार सन् 1848 में जब ज्योतिबा फूले ने महिलाओं के लिए प्रथम स्कूल खोला था। तत्कालिन में शिक्षा में सुधार के लिए कई समीतियॉ बनी लेकिन **लॉर्ड मैकाले** की शिक्षा नीति ने अंग्रेजी भाषा पर आधारित शिक्षा प्रणाली पर बल दिया, ताकि भारतीय मानसिक रूप से गुलाम बने रहें और अंग्रेजो के सहायक के रूप में ही कार्य करें। बाद में बाल गंगााधर तिलक, दयानंद सरस्वती, एनी बिसेंट इत्यादि ने भारतीय भाषाओं पर आधारित शिक्षा प्रणाली बल दिया। भारतीय शिक्षा प्रणाली की परंपरानुसार पुराने पाठ्यक्रम में सुधार, नवाचार की कमी, रोजगार परकता का अभाव, इत्यादि के आधार पर **नई शिक्षा नीति 2020** का निर्माण किया गया और प्राचीन प्रणाली की आलोचना की गई है। नये शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्य इन्ही कमियों को दूर कर, समग्र समावेषी शिक्षा प्रणाली प्रदान करना था। जो छात्रों के जरूरतों के अनुसार उनके आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं बौद्धिक विकास कर सकें।

नई शिक्षा नीति 2020 के मुख्य उद्देश्य–

1. तीन वर्ष के आयु से लेकर सभी आयु वर्ग के बच्चों के लिए शिक्षा सार्वभौमिक रूप से प्रदान करना तथा बहुभाषावाद को बढ़ावा देना है।
2. मातृभाषा तथा स्थानीय भाषाओं को प्रोत्साहित करना।
3. छात्र–छात्राओं को उनके रूचि तथा योग्यता अनुसार विषय का चयन कराना।
4. व्यवसायिक शिक्षा एवं रोजगार परक शिक्षा प्रणाली पर बल देना।
5. शहर तथा गॉव के बीच की दूरी को शिक्षा संस्थाओं के माध्यमों से कम करना।
6. उच्चतर शिक्षा के तहत तकनीकी श्रम को सर्वसुलभ बनाना भी इसका मुख्य उद्देश्य है।
7. **नई शिक्षा नीति 2020** मं सभी वर्ग समुदाय को समान अवसर प्रदान कर उनके विकास को सुनिश्चित करना है। जो समुदाय या वर्ग हॉसिये पर है उनकी जरूरत तथा आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना भी मुख्य लक्ष्य है।
8. असमानता को दूर कर सभी को उचित शिक्षा प्रदान करने का यह नवीन प्रयास है।

अध्ययन का उद्देश्य–:

1. भारतीय प्राचीन शिक्षा प्रणाली एवं नवीन शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. नई शिक्षा नीति 2020 के आवश्यकता का अध्ययन करना।
3. नई शिक्षा नीति 2020 में समावेषी विकास का अध्ययन करना।
4. नई शिक्षा नीति 2020 समावेषी विकास की बदलाव या परिवर्तन का अध्ययन करना।
5. नई शिक्षा नीति 2020, छात्रों के जरूरतों को कैसे पूर्ण करता है का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन–:

प्रस्तुत शोधपत्र के लिए **रमेश पोखरियाल निशंक** की पुस्तक **''शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण–नई शिक्षा नीति 2020,''** सुरेश भटनागर की **भारत में शिक्षा का विकास–2023**, पंकज आरोड़ा एवं उषा शर्मा रचित **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: रचनात्मक सुधारों की ओर 2021,** आदि पुस्तकों का अध्ययन किया गया है।

भारतीय शिक्षा नीति का सूक्ष्म इतिहास–

प्राचीन काल में शिक्षा की गुरूकुल प्रणाली रही है। जैन एवं बौद्धकाल में वंचित वर्गों की बात की गई है। इसी प्रकार मध्य काल में इस्लाम धर्म के प्रभाव के कारण मदरसे एवं मकतब शिक्षा के केंद्र बने, लेकिन भारतीय शिक्षा प्रणाली पर ईस्लाम पर अधिक प्रभाव नहीं दिखायी पड़ा। भारत में समावेषी शिक्षा हेतु छत्रपति साहू, सावित्री बाई फूले एवं ज्योतिबा फूले आदि नें दलित एवं पिछड़े वर्ग के लिए शिक्षण संस्थान खोले फिर भी जनसंख्या का अधिकांश भाग शिक्षा से वंचित रहा। अंग्रेजो के शासन काल में शिक्षा प्रणाली सन् 1835 से 1854 तक **मैकाले तथा वुड** के घोषणा पत्र के अनुरूप रहा। सन् 1882 में **हण्टर आयोग** ने जिस शिक्षा प्रणाली को जन्म दिया वह पश्चिम के प्रति आकर्षण तथा उदारवादी विचारधारा को महत्व देने वाली थी। इस प्रणाली ने भारतीय भाषाओं पर बल नहीं दिया। इसका उद्देश्य यह था कि भारतीय पढ़–लिख कर केवल बाबू और कलर्क ही बनकर हमारे कार्यों मे सहायक बने रहें।

स्वतंत्रता पश्चात् भारत की शिक्षा प्रणाली ने आमूलचूल परिवर्तन कर सुधार की दिशा में बल दिया। आजादी के बाद भारत में सन् 1948 में केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड की सिफारिश पर उच्च शिक्षा के लिए **विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग** का गठन एवं **माध्यमिक शिक्षा** के लिए **मुदलियार आयोग** का गठन किया गया। जिसका उद्देश्य छात्र के व्यक्तित्व के समावेषी विकास के लिए ज्ञान प्रदान करना था। सन् 1964 में कोठारी आयोग तथा 1984 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा व्यय को राष्ट्रीय आय के 6 गुना तक बढाने का आहवान किया। फिर पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के नेतृत्व की भारत सरकार ने शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति प्रस्तुत की। इस नीति ने सभी विषमताओं को दूर कर विशेष रूप से महिलाओं, अनूसूचित जाति, अनूसूचित जनजाति को समान शिक्षा के अवसर प्रदान करने पर जोर दिया। इस शिक्षा प्रणाली में बाल केन्द्रीत प्राथमिक शिक्षा के दृष्टिकोण पर ऑपरेशन ब्लेक बोर्ड चलाया गया, जिसमें गरीबों के लिए छात्रवृत्ति, प्रौढ शिक्षा, नवीन संस्थानों के विकास एवं स्थापना तथा आवास सुविधाएं प्रदान करने पर बल दिया। सन् 1987 **शिक्षक शिक्षा योजना** अंतर्गत जिला शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना के लिए एनसीइआरटी (NCERT) का सुदृढीकरण किया गया। सन् 1995 में **मिड डे मिल** पर बल दिया गया। जिसे 2021 में **प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना** का नाम दिया गया।

इन विशेषताओं के साथ यह शिक्षा प्रणाली उपभोक्तावादी समाज, परीक्षा पर महत्व और रटने वाली संस्कृति से ग्रसित रही है। वर्तमान में ज्यादातर छात्र केवल स्कोर करने या सरकारी नौकरी हासिल करने के उद्देश्य से ही अध्ययन कर रहा है। अभी तक शिक्षा नीति में जो परिवर्तन हुए वह केवल अंग्रेजी शिक्षा नीति से बहुत अलग नहीं थे इसलिए शिक्षा के बुनयादि ढॉचे में परिवर्तन की दर, नई शिक्षा नीति हेतु इस शिक्षा प्रणाली के कमियों को दूर करने भारत सरकार ने **डॉ. कृष्ण स्वामी कस्तूरीरंगन** की अध्यक्षता में समिति गठित की। जिसने 2019 में अपना रिपोर्ट केन्द्र सरकार को सौंपा। **नई शिक्षा नीति 2020** के नाम से जिसे 2020 में ही लागू कर दिया गया। NEP-2020 में 03 से 18 वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अंतर्गत रखा गया। **नई शिक्षा नीति 2020** के तहत 2030 तक नई शैक्षिक प्रणाली को निश्चित किया गया है। लगभग 102 मॉडल स्थान पर **5334** शैक्षिक प्रणाली के आधार पर पाठ्यक्रम विभाजित किया गया है। **नई शिक्षा नीति 2020** का उद्देश्य सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान कर भारत को वैश्विक स्तर पर ज्ञान का केन्द्र बनाना तथा देश को जीवंत ज्ञान समाज में बदलने में योगदान है।

समावेषी शिक्षा का तात्पर्य है–

1. बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना।
2. असमानताओं को दूर करने पर बल देना।
3. सभी के लिए न्यायोचित शिक्षा ।
4. बच्चों के जरूरत पर आधारित शिक्षा।
5. सीखने की प्रक्रिया में प्रत्येक बच्चे की प्रतिभागिता को अधिकाधिक करना।
6. सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में विविधता को समझना।

नई शिक्षा नीति 2020, के अनुसार अध्याय 6 एवं 14 में समावेषी शिक्षा के मुद्दे को रखा गया है। लिंग के आधार पर महिला एवं ट्रांसजेंडर व्यक्ति, सामाजिक आधार पर पिछड़े वर्ग, अनूसूचित जाति, अनूसूचित जनजाति, धार्मिक एवं अल्पसंख्यक तथा भौगोलिक आधार पर आकांक्षी जिले के विद्यार्थियों तथा निम्न आय वर्ग के बच्चों की शिक्षा पर अत्यधिक प्रयास किया गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्य 2030 तक सभी स्कूली बच्चों को स्कूली शिक्षा में 100 जीईआर GER पूर्व माध्यमिक विद्यालय से माध्यमिक विद्यालय स्तर तक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण का लक्ष्य निहित है। **नई शिक्षा नीति 2020** में 2040 तक सभी उच्च शिक्षा संस्थानों का उद्देश्य बहुविषयक संस्थान बनाकर इक्वीटी और समावेशन के लिए एकल विनियामक द्वारा विनियमन करना है। नई शिक्षा नीति में सतत मूल्यांकन, क्षेत्रिय भाषाओं में कुशलता, व्यवसायिक और व्यवहारिक शिक्षा तथा बहुविषयक आधारित नीति पर बल दिया गया है। नई शिक्षा नीति, इस बात पुष्टि करता है कि स्कूली शिक्षा में सामाजिक श्रेणी के अंतरालों तक पहॅच, भागीदारी और सीखने के परिणामों को पाटना, ऐसे विकास कार्यक्रमों को प्रमुख लक्ष्यों में शामिल किया गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 में ट्रांसजेंडर व्यक्ति एवं अल्पसंख्यक छात्राओं की शिक्षा के लिए अधिक निधि तथा बुनियादी ढ़ॉचे पर अधिक जोर दिया गया है। दिव्यांग बच्चों के लिए बाधा मुक्त शिक्षा पर बल दिया गया है, यहां तक नियमित दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष स्कूली शिक्षा और गृह आधारित शिक्षा के विकल्प का चयन कर सकते हैं। सहायक उपकरण, उपयुक्त प्रौद्योगिकी आधारित उपकरण के साथ–साथ पर्याप्त भाषा में पठन–पाठन सामाग्री सुनिश्चित की गई है। इस प्रणाली में वैकल्पिक स्कूलों का विकास, पारंपरिक शिक्षा शास्त्र का संरक्षण, पुस्तकालयों का सुदृढ़ीकरण, हितग्राहीयों में जागरूकता तथा स्कूल परिसरों के माध्यम से संसाधनों का सदुपयोग और प्रभावी शासन पर बल दिया गया है।

शोध सामाग्री और प्रविधि –

शोधकार्य का आधार प्राथमिक एवं द्वितीयक समंक है जो सरकारी सूचनाओं, कौशल शिक्षा, प्राचीन शिक्षा की कमी को दूर कर, सभी वर्गों के छात्र समूहों की स्थिति में सुधार हेतु बनाए गए **नइ शिक्षा नीति 2020** की जानकारियॉ हैं जो पुस्तकों को आधार मानकर जुटाई गई है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के परंपरा अनुसार पुराने पाठ्यक्रम में सुधार, नवाचार की कमी, रोजगार परकता का अभाव, इत्यादि के आधार पर **नई शिक्षा नीति 2020** में प्राचीन शिक्षा प्रणाली का आलोचना की गई है, प्रस्तुत शोधपत्र के लिए सैद्धांतिक एवं व्याख्यात्मकता के साथ–साथ निम्न क्रियाविधि का प्रयोग किया गया है।

1. तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।
2. विश्लेषणात्मक अध्ययन।
3. अन्तः अनुशासनात्मक अध्ययन पद्धति।

शोध का निष्कर्ष शोध विधियों के विश्लेषण उपरांत निकाला गया है।

निष्कर्ष–:

नई शिक्षा नीति 2020, भारतीय शिक्षा नीति में पहला ऐसा बदलाव है जो शिक्षा के बुनियादी स्वरूप के बदलाव की ओर इंगित करता है। यह बुनियादी ढाचें में परिवर्तन कर रही है तथा गांधी के स्वरोजगार कौशल पर अधिक बल देती है। नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा सार्वभौमिक हो तथा इस नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास को बढ़ावा देती है। जिसमें कमजोर वर्ग या विशेष रूप से पिछड़ों के लिए विशेष प्रावधान बनाया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 बहुविषयक तथा बहुद्देशीय शिक्षा नीति है। यह शिक्षा प्रणाली भारतीय केन्द्रित शिक्षा प्रणाली की कल्पना करती है जो सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराके न्याय संगत समाज के निर्माण की एक पहल है।

संदर्भ सूची–:

1. निशंक रमेश पोखरियाल (2020), ''शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण–नई शिक्षा नीति 2020'' प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. सुरेश भटनागर ''भारत में शिक्षा का विकास 2023'' आर. लाल प्रकाशन।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार दस्तावेज, दिल्ली।
4. पंकज आरोड़ा एवं उषा शर्मा ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020ः रचनात्मक सुधारों की ओर 2021'' शिप्रा प्रकाशन।
5. पुरोहित, जगदीश नारायण, 2020 ''नई शिक्षा नीति 2020'' राजस्थान प्रकाशन, त्रिपोलिया।
6. पाण्डेय आर. 2000, ''मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में'' लाल बुक डिपो दिल्ली।
7. Kumar K. (2005), Quality of Education at the Beginning of the 21st Century: Lessons from Indian Educational Review 2. Draft National Education Policy 2019.
8. https:// www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd /files/ NEP_Final_ English.pdf referred 10/08/2020
9. Anshubala (2023), New Education Policy and Inclusive Development" (VOL- VIII, ISSUE- VII, Anthology the Research, SRF Kanpur Publication, India
10. Vandana Singh (2023), "Present Time and Value Based Education," (VOL- VIII, ISSUE- VII, Anthology the Research, SRF Kanpur Publication, India
11. https://www.hindisamay.com
12. https://teachersofbihar.blogspot.com
13. https://timesofindia.indiatimes.com
14. https://www.surta.in